July 2021

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFEREED & INDEXED JOURNAL

Special Issue 270

Multidisciplinary Issue

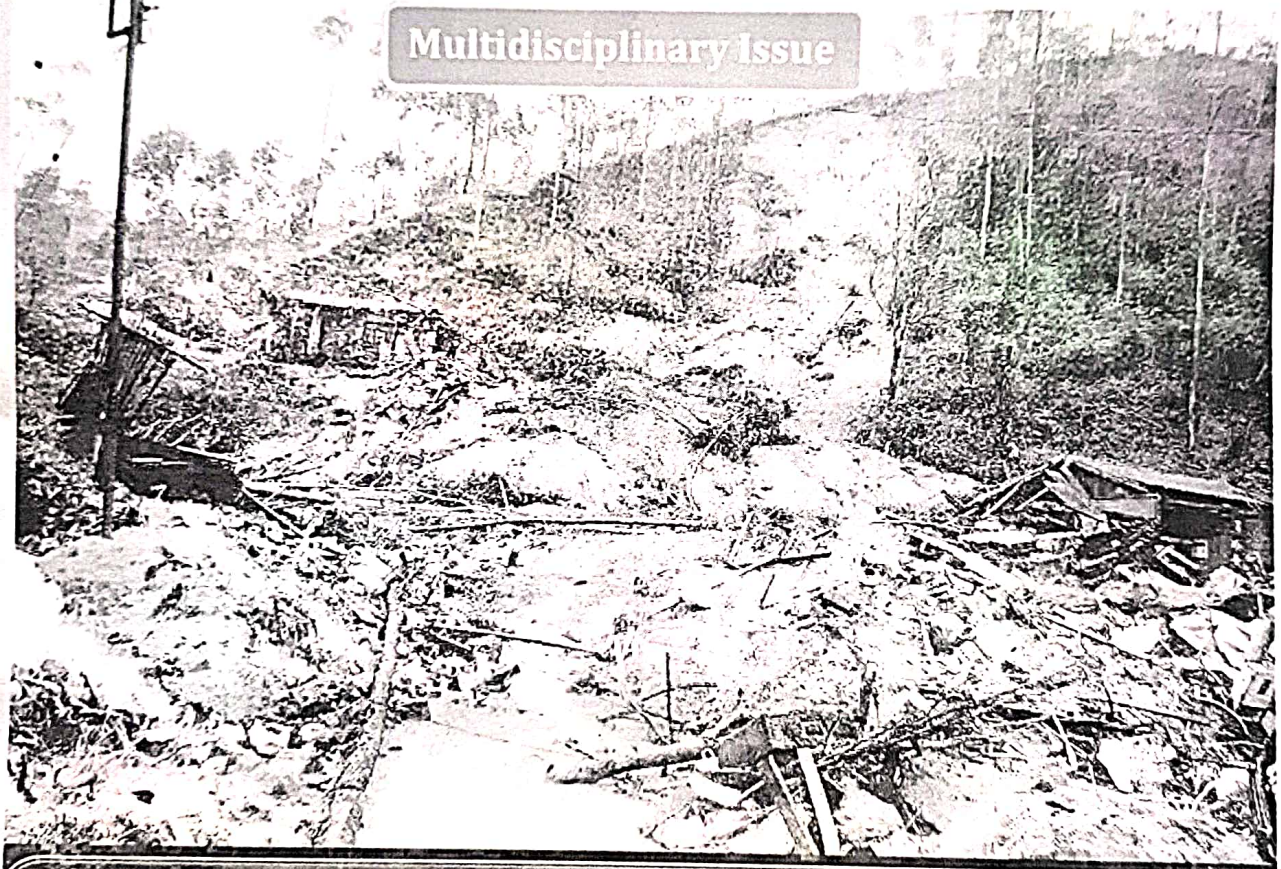

Chief Editor :
Dr. Dhanraj T. Dhan[illegible]
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

RESEARCH JOURNEY

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

July-2021 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFEREED & INDEXED JOURNAL

Special Issue 270

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

*Cover Photo (Source) : Internet – Taliye landslide : Horror of hillock crashing onto village, burying 84 human being.

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 1000/-

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
	English Section		
01	Rohingya Refugees and Cross Border Terrorism in South Asia	**Dr. Priyanath Ghosh & Dr. Sangeeta Roy**	06
02	Nation and Nationalism in an Antique Land	**Dr. Girish Kalyanshetti**	11
03	Medicinal Plants Traditionally Used in Jaundice from Daund Region, Pune District	**Subhash Samudra**	14
04	Metadata and its Significance in Information Organisation	**Shri. Amol Meshram**	19
05	Study the Correlation between Awareness of College Level Girl Students of Arts & Commerce Faculty toward Multi-Culture and Value Education	**Dr. Jayashri Nemade**	22
06	*'Lagnachi Wife Weddingchi Bayko'* : Mingling of English in Marathi	**Prof. Kavita Kakhandki**	28
07	The Glimpses of Ecocriticism and Ecological Consciousness in Selected Indian English Fictions	**Dr. Kamalakar Gaikwad**	33
08	A Study of Gender Issues in Adichie's *'Purple Hibiscus'*	**Mr. Rahul Salve**	39
09	Spiritual Possession : Comparative Study Emotional Intelligence, Level of Aspiration and Socio-economic Status	**Dr.C.P.Labhane, Ashwini Jadhav**	43
10	Work Life Balance and Organizational Commitment among Male and Female Police Constables	**Mrs. Kalpana Patil, Dr. Pundlik Rasal**	48
11	Tamasha's Conversion into Loknatya (Folk play) : A New Genre by Anna Bhau Sathe	**Vijay Thange**	54
12	Right of Workers to Form Association & Trade Unions : An Analysis From International and National Perspective	**Dr. Asha Tiwari**	58
13	E-Commerce and Online Shopping Business in India	**Dr. D. R. Panzade**	62
14	Short-Term Migration : A Survival Strategy, Inequality Reduction and Opportunities for All	**Meenakshi Kumari , Dr. Mitali Tiwari & Dr. Rajesh Chandra**	68
15	Human Relationship in Nayantara Sahgal's *'Storm in Chadigagarh'*	**Dr. Balasaheb Pawar**	77
16	Impact of Gender Discrimination in Shashi Deshpande's *'The Dark Holds No Terrors'*	**Prof. Bharatchandra Shewale**	81
17	Use of Information and Communication Technologies (ICT) in Teaching-Learning Process	**Dr. Sanju Jadhav**	84
18	The Impact of Covid-19 on Indian Stock Market	**Dr. Sudhakar Pagar, Mr. Ajinkya Patil**	90
19	Contribution of NGOs in Rural Development of Maharashtra	**Dr. Sanjay Rachalwar**	95
20	Political Participation of Indian Women's	**Dr. Abhijit Patil**	100
	हिंदी विभाग		
21	भारत की भील आदिवासी जन-जातियों का जनजीवन	**डॉ. वाल्मीक सूर्यवंशी**	106
22	कोयमुर्रीद्वीप की, सामाजिक एंव सांस्कृतिक सभ्यता और छती !	**डॉ. प्रकाश पी. वट्टी**	108
23	प्रसाद की काव्य-भाषा में ध्वनि-संयोजन	**डॉ.लियाकत शेख**	113

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Special Issue - 270 : Multidisciplinary Issue
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
July- 2021

भारत की भील आदिवासी जन-जातियों का जनजीवन

प्रा. डॉ. वाल्मीक दशरथ सूर्यवंशी
हिंदी विभागाध्यक्ष,
कर्मवीर भाऊसाहेब हिरे, कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
निमगांव तह. मालेगांव जि. नाशिक (महाराष्ट्र)
मोबा. - 9421604624 , इमेल - valmiksuryawanshi123@gmail.com

प्रस्तावना :

देश की सबसे प्राचीन प्रजाति आदिवासी हैं। ये समुदाय इतिहास की एक लम्बी कडी से संबधित है। तथा इन आदिवासियों को कई नामों से जाना व पहचाना जाता है। प्रायः इन्हें आदिवासी के आलावा, वनवासी, गिरिजन आदि नामों से भी पुकारते हैं। सभ्यता की दौंड में सुसंस्कृत व्यवस्था सीमित साधनों की रही, खेती बाडी करने का इतिहास कोई पूराना नहीं है।

आरंभिक काल से ही आदिवासी नैसर्गिक वातावरण का प्रेमी रहे हैं। वृक्षों के प्रति जा सम्मान की भावना मिलती है, इसी कारण कई वृक्ष काटने से बच गयें हैं। कठिन दिनों में ये वृक्षों को गिरवी रख कर अपना काम चलाते है। जंगलों में रहते हुए उनके पास जडीबूटियों के उपयोग तथा विभिन्न प्रकार की व्याधियों के उपचार की गहरी जानकारी हैं। आदिवासी समुदाय में सहकारिता की भावना कई अवसरों पर देखने को मिलती है। जब कृषक भील को खेत की कटाई, बुआई, करनी होती है तो वह श्रमदान के लिए गांव के अन्य परिवारों को आमंत्रित करते हैं। आमंत्रित परिवार मिलकर खेतों की कटाई, बुआई कर मेहमान द्वारा दिया एक समय का भोजन कर सुन्तुष्ट अनुभव करते हैं। सहकारिता की यह रस्म 'हलमा' कहलाती हैं।

लोकसंगीत आदिम जातियों का अलिखित एवं मौखिक होता है। यह एक पीढी से दूसरी पीढी में हस्तान्तरित होता हैं। हमारे देश में कुल ५३२ जनजातियॉ है और उनकी जनसंख्या कुल जनसंख्या के करीब सात प्रतिशत हैं। घुरिये ने आदिवासियों को 'पिछडे हिंन्दु' भी कहा है। भारत में अनुसूचित आदिवासी समुहों की संख्या ७०० से अधिक है। सन १९५१ की जनगणना के अनुसार आदिवासियों की संख्या १, ९१, ११. ४९८ थी जो २००१ की जनगणना के अनुसार ८, ४३, २६, २४० हो गई। यह देश की जनसंख्या का ८.२ प्रतिशत है। १ गांव में मौत-मरण हो तो ढोल वजाकर गांव सूचित करते हैं। इस अवसर पर प्रत्येक हिशिया एक-एक लकडी और कुछ अनाज दुखी परिवार को देता हैं। जनजाति व्यक्तियों का वह एक समूह है जो निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में निवास करता हैं। भील जनजातियॉ अपनी संस्कृति को आज भी विविधता से बनाए हुए है। २

भील मध्यभारत की एक जनजाति का नाम हैं। यह जनजाति भारत की सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई जनजाति हैं। प्राचीन समय में यह लोग दक्षिण दिशा से लेकर लंका तक फैले हुये थे। भील जनजाति की भाषाकों भील भाषा कहते हैं। भारत वहादुर धनुष पुरुष भी कहा जाता हैं। 'भील' शब्द की उत्पत्ति 'भिल्ला' शब्द से हुई। संस्कृत में 'भिंद' शब्द से 'भील' शब्द की उत्पत्ति हुई हैं। इस का अर्थ वार-वार लक्ष को धनुष से मारना। तमील में 'बिंस्टूवर' से भील शब्द बना हैं, इस का अर्थ धनुष लिया जाता है। द्रविड में 'भिलु' शब्द भील शब्द वना है जिसका अर्थ धनुष्यबाण होता है।३

आदिवासी का जनजीवन :

आदिवासी का जनजीवन संयुक्त रुप से देखने कों मिलता हैं। उनकी गावों की बसावट की संरचना पर्वतीय जगहों में विस्तृत दिखाई देती है। बुनियादी तौर पर भीलों में दो प्रकार की विभिन्नताएं है। पर्वतीय ढलाऊ स्थानों पर पाल में रहनेवाले आदिवासी और मैदानी भागों में मिश्रित जातियों के गांव में रहनेवाले आदिवासी १ पाल एक भौगोलिक और सांस्कृतिक इकाई है, ऐसे गांव जो पहाडी क्षेत्र में है, तथा पथरीली एवं ढलाऊ क्षेत्र में बसे हुए है, इन्हे पाल कहते हैं। यह इकाई कई गोत्रों के फलों से वनी होती हैं। पाल में

रहनेवाले आदिवासियों की सांस्कृतिक रीति-रिवाज, खान-पान के व्यवहार, मैदानी भीलों से अलग हैं। प्रत्येक आदिवासी अपने क्षेत्र में पेड पौधे, गांव की सीमा और अपने क्षेत्र के अधिकारों से वाकिफ हैं। किस समय भांनगडिया की शरण में जाना होगा, ये सब परम्पराबध्द हैं। प्रत्येक युवक-युवती को अपने गोत्र एवं अटक की मर्यादा मालूम है। गोत्र के बाहर जाकर विवाह मान्य होगा या नही यह भी मालूम हैं।

बहुओं को दहेज के लिए मौत के घाट उतार देना या सास-बहु में निरन्तर तनाव बने रहने जैसी समस्याएं आदिवासी समाज में नहीं देखी जाती है, जो समस्याएं, आदिवासी समाज में नहीं देखी जाती है जो सामान्य तौर पर सवर्ण उच्च जातियों में देखी जाती हैं। आदिवासी स्त्रियों में सामान्य तथा वैधव्य कम भुगतना होता है। पति के मरने के बाद जैसे ही शोक का समय गुजरता है, पत्नी दुसरा विवाह कर लेती है।

देश के पुरे आदिवासियों के रहने व बसावट की सरंचना को ध्यान है तो स्पष्ट होता हैं कि आदिवासी का एक व्यापक हिस्सा इधर-उधर बस्तियों या गांवों में निवास करता है। ग्रामीण समुदाय की भांति आदिवासी समुदाय की भी हर दिन की कुछ-ना-कुछ जरुरत होती है। उनकी कुछ आवश्यकताएं गांव में ही पूरी हो जाती हैं, और कुछ आवश्यकताओं के लिए गांव से बाहर जाना पडता हैं। सामान्य तथा उत्पादन के एक भाग कों गांव में या सांस्कृतिक बाजार में वेच दिया जाता है। इसी से कपडा, नाम, तम्बाकु, शक्कर आदि खरीदे जाते हैं। कुछ ग्रामीणों के प्रथाओं में कार्यक्रम होते है। जिनकी पूर्ति छोटे वर्गो की सेवा के द्वारा प्राप्त होती है। उदाहरण के लिए जब गांव में कोई जानवर मर जाता है तो भील उसे उठाकर ले जाते हैं। इसकें वदले में वह साल में एक दो जोडी जूते भील को देता है। हिंदुओं की मौत के समय अंतिम संस्कार भी करते है, उसके बदले उन्हे खाद्यानों तथा नकद पैसा दिया जाता है। ५ होली के समय भीलों का समय खेल बजाकर नाचते है और साथ में गीत भी गाते है। पुरे गांव में घुमकर उन्हे पैसा तथा धान मिलता है। ग्रामीणों से कुछ प्रथाओं पर कार्यक्रम होते रहते हैं। इन आयोजनों में गवरी खेलने रमने जाता है, तो पुरे गाव को भील आमंत्रित करणे जाता हैं। पुरा गांव दुसरे गांव की गवरी को खेलने के लिए आमंत्रित करता हैं।

अंततः यही कहना होगा कि आज आदिवासी जनजातियों में उनके दैनंदिन जीवन कुछ सुधार होना जरुरी हैं। उनके प्रती शिक्षा क्षेत्र बहुत कम लगता है। उनकी जीवन शैली भी बदलने लगी है। भील जनजातियों को शासन ने भी उपर उठाने का प्रयास करना चाहिए । उनकी भाषा के प्रति भी अभ्यास होना जरुरी है। आदिवासी की जनजाति का क्षेत्र अत्यंत व्यापक हैं। हर प्रांत में उनके जनजीवन पर आज सर्वत्र अभ्यास होना जरुरी है। उनकों उपर उठाना और शिक्षित एवं आधुनिकता के समाज में खडा करना ही हमारा प्रमुख लक्ष होना चाहिए । जिस समय आदिवासी भील हर क्षेत्र में आधुनिक रुप में दिखाई देगा तभी परिवर्तनशील भारत की शक्ति अधिक रुप मे हम महसूस करेंगे।

संदर्भ ग्रंथ :

१. आदिवासी समाज एवं संस्कृति - डॉ. शैला चव्हाण-कदम, पृष्ठ - १३.
२. आदिवासींचे उठाव - डॉ. सर्जेराव ज. भामरे, पृष्ठ - १७.
३. वही, पृष्ठ - २.
४. आदिवासी भील मीणा - संतोष कुमार जैन, पृष्ठ - ३०.
५. जननायक तंटयाभील - बाबा भांड, पृष्ठ - ७८.
६. वीर विरसा मुंडा - सूश्री शकुंतला साहू, पृष्ठ - ३७.